❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 45, अंक 4 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 22 नवम्बर, 2021 से रविवार 28 नवम्बर, 2021

विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122

दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य संदेश टीवी

www.AryaSandeshTV.com

आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के तत्त्वावधान में आर्यसमाज गांधी चौक लातूर के सहयोग से पूर्व सभा प्रधान एवं वरिष्ठ संन्यासी

स्वामी श्रद्धानन्द जी का 104वां जन्मोत्सव, कार्यकर्ता सम्मेलन एवं चिन्तन बैठक सम्पन्न

दिल्ली सभा की ओर से महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने पीतवस्त्र, शाल एवं सम्मान पत्र से किया सम्मानित

सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि जी एवं पूर्व सांसद श्री जनार्दन राव वाघमारे जी के घर पहुंचकर भेंट किया सम्मान

दिनांक 21 नवंबर, 2021 को सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी प्रात: 11 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के पूर्व प्रधान एवं वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के 104वें जन्म दिवस समारोह, प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन एवं चिन्तन बैठक में भाग लेने के लिए लातूर पहुंचे।

राष्ट्र के प्रति आर्यसमाज की जिम्मेदारियों को लेकर किया कार्यकर्त्ताओं का आह्वान

महाराष्ट्र के तपस्वी संन्यासी एवं अनेकों विद्यार्थियों को वैदिक धर्म की दीक्षा देने वाले मानवता के सजग प्रहरी, प्रसिद्ध समाज सेवक तथा सभा के पूर्व प्रधान एवं संरक्षक पूज्य स्वामी श्रद्धानंद जी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) का 104वां जन्मदिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। लातूर के गांधी चौक आर्य समाज में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य थे। दिल्ली सभा की ओर से उन्होंने स्वामीजी कौ सम्मान पत्र, शॉल, पुष्टाहार प्रदान कर गौरव किया। प्रांतीय सभा की ओर से भी पदाधिकारियों ने उनका सम्मान किया।

इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने कहा कि स्वामी जी का तपस्वी जीवन आर्य जाति को नई चेतना प्रदान करने वाला है। इतनी अधिक आयु में भी स्वामीजी प्रसन्न, उत्साही एवं ऊर्जावान

- शेष पृष्ठ 8 पर

प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के पूर्व प्रधान, संरक्षक एवं वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के 104वें जन्म दिवस समारोह के अवसर सम्मान पत्र भेंट करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। इस अवसर पर उन्होंने सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि जी का सपत्नीक स्वागत एवं सम्मान किया। वे वैदिक विद्वान व पूर्व राज्य सभा सांसद श्री जर्नादन राव वाघमारे जी के आवास पर भी पहुंचें और वैदिक साहित्य भेंटकर सम्मानित किया। महाराष्ट्र सभा के अधिकारीगण एवं सदस्य भी साथ रहे

जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी एवं सनसिटी प्रोजेक्ट्स के चेयरमैन श्री लक्ष्मी नारायण गोयल जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में पधारने पर स्वागत एवं सम्मान

आर्यसमाज के विभिन्न प्रकल्पों - आर्य मीडिया सेन्टर, प्रचारक प्रकल्प, साहित्य प्रचार प्रकल्प का निरीक्षण

राष्ट्र निर्माण का कार्य कर रहा है आर्य समाज - सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन जे.बी.एम.ग्रुप

22 नवंबर 2021; दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की शिरोमणि सभा के रूप में राष्ट्र एवं मानव सेवा के विविध सेवा प्रकल्पों को गतिशील करने वाली दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में 22 नवम्बर 2021 को अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के माननीय प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के मालिक श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी के साथ सनसिटी प्रोजेक्ट्स के चेयरमैन श्री लक्ष्मी नारायण गोयल जी भी सभा कार्यालय में उपस्थित हुए। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, उपप्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी और कार्यकर्ताओं ने दोनों महानुभावों का हार्दिक अभिनंदन और स्वागत किया। श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी और श्री गोयल जी ने सभा द्वारा संचालित सभी सेवा कार्यों का निरीक्षण किया। आर्य मीडिया सेंटर को देखकर श्री आर्य जी ने सभा के सेवा कार्यो की उन्मुक्त हृदय से सराहना करते हुए कहा कि आर्य मीडिया सेंटर को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है और यहां के कार्यकर्ताओं की टीम को देखकर मेरा मन गदगद है। दिल्ली सभा द्वारा संचालित यह कार्य व्यक्ति से लेकर राष्ट्र निर्माण का कार्य संभव हो रहा है, इसके लिए मैं सभी अधिकारियों को बधाई देता हूं। श्री गोयल जी ने भी सभा के प्रकल्पों के प्रति आनंद अनुभव करते हुए मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों की प्रशंसा की और कहा कि आर्य समाज देश के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रहा है, इसके लिए मैं सभी अधिकारी, कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूं। इस अवसर पर सभा की ओर से श्री एस के आर्य जी और श्री गोयल जी का का पीत वस्त्र द्वारा अभिनंदन किया गया और उन्हें स्मृति चिन्ह भी भेंट किया गया।

देववाणी-संस्कृत

अद्‌भुत मित्र

वेद-स्वाध्याय

देवो देवानामसि मित्रो अद्‌भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम वत सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।। -ऋ. 1/94/13
ऋषिः **कुत्स आङ्गिरसः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **विराडजगती।।**

शब्दार्थ-अग्ने = हे परमेश्वर! **देवानां देवः असि** = तू देवों का देव है **अद्‌भुतः मित्रः** = तू अद्‌भुत मित्र है! **वसूनां वसुः असि**= तू सब वसुओं का वसु, धनों का धन है।! **अध्वरे चारुः**= यज्ञ में ते शोभायमान है, अतः हम चाहते हैं कि **वयम**= हम **तव** = तेरी **सप्रथस्तमे शर्मन्**= विस्तीर्णतम शरण में **स्याम**= होवें और **तव सख्ये**= तेरे सख्य में **मा रिषाम**= हम नष्ट न होवें।

विनय-हे प्रभो! हम चाहते हैं कि हम तेरी विस्तीर्णतम शरण में रहने लगें। तेरी शरण इतनी फैली हुई है कि उसमें आकर मनुष्य किसी भी देश में व किसी भी काल में दुःख नहीं पा सकता। संसार की और किसी भी वस्तु का आश्रय ऐसा नहीं है । सब सुख, सब आश्रय और सब शरण इसके सामने अत्यन्त तुच्छ है, क्योंकि संसार के सब देवों के भी देव तुम हो। सब देवों में देवत्व तुम्हारे द्वारा ही आया है। तुम्हारे आश्रय के बिना इन अग्नि आदि महान् दीखने वाले देवों में कुछ नहीं है। इन सब बसाने वालों के बसाने वाले तुम हो। सब धनों के धन तुम हो। तुम्हें पाकर और सब धन बेकार हो जाते हैं। सब पुण्य यज्ञों के अन्दर तुम ही शोभायमान होते हो। यज्ञों का सौन्दर्य तुम हो। तुम्हारे बिना कोई यज्ञ, यज्ञ नहीं रह सकता और तुम अद्‌भुत मित्र हो। अहो! ऐसा मित्र और कौन हो सकता है? यदि सर्वशक्तिमान और तीनों कालों का जानने वाला मित्र किसी को मिल सके तो उसे और क्या चाहिए! इसीलिए अब हम तेरे सख्य में (मैत्री में) आना चाहत हैं। हमने तुझे देवों का देव, वसुओं का वसु समझ लिया है, अतः हमें अब किसी अन्य देव व वसु की प्राप्ति की चाहना नहीं रही है, हमने तुझे ''सब यज्ञों के सौन्दर्य'' रूप में देख लिया है, अतः हमें अब किन्हीं कर्मकाण्ड-मय यज्ञों के करने में आर्कषण नहीं रहा है, अब तो तेरे निरन्तर ध्यान का यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ लगता है। हमने तुझे अद्‌भुत मित्र देखा है- अहो, ऐसा अद्‌भुत! ऐसा विलक्षण!! तुझ सर्वज्ञ, सर्वसमर्थ मित्र की अद्‌भुतता दूसरे न जानने वाले को कैसे समझाई जाए? अहो, तुम कैसी विलक्षणता से हम सबके साथ आठों प्रहर, हर घड़ी, हर पल परम मित्रता निभा रहे हो! तुम जैसे अद्‌भुत मित्र को देखकर अब हमें और किसी की मैत्री की आवश्यकता नहीं है। अरे, वे अनजान लोग हैं जो संसार में और किसी की मैत्री पाने के लिए टक्करें मारते फिरते हैं। तेरी विस्तृत शरण में तो और सब शरण समा जाती हैं, अतः हे स्वामिन्! हमें तो अपनी मैत्री प्रदान कर, तब हमें कोई भय न रह सकेगा! हे प्रभो! तू हमें अपनी अनन्त, अपार शरण में जगह दे दे, तब हमें किसी विनाश का भय न रह सकेगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कैसा है अरब का नया धर्म जो मच गया विवाद

.....इस्लाम के इमाम मौलवी और मौलाना या इन्हें मजहबी सेल्समेन कहें तो ये इसे एक सिरे से ख़ारिज कर रहे हैं। इसका कारण भी हो सकता है कि एक तो 14 सौ साल कत्लेआम मचाकर इस्लाम को खींचकर यहाँ तक लाये। दूसरा आसमानी किताब का रट्टा मारा, अब अचानक दूसरी कोई किताब रटनी पड़ेगी। इस उम्र में याद हो, ना हो, तो धंधा एकदम चौपट हो जायेगा, तो इनका व्यक्तिगत विरोध जायज है। तीसरा शराब-शबाब जन्नत उसमें किलोलें करती हूरें यानि सपने बेचने की दुकान ये लोग अचानक कैसे बंद करें? .....

यूं तो दुनिया भर में 195 के करीब देश हैं। लेकिन आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इन दो सौ के करीब देशों में लगभग 300 धर्म, मत और पंथ के मानने वाले लोग हैं। यानि भले ही व्यापक रूप से पांच-सात धर्म ही सुनने में आते हों- हिन्दू, जैन, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम और सिख। लेकिन इसके अलावा भी कई और धर्म भी अपना अस्तित्व बनाए रखे हुए हैं, तो कुछ अपना अस्तित्व खो चुके हैं। जैसे अकबर का चलाया 'दीन ए इलाही' जो बाद में गायब हो गया। इसे आप ऐसे समझिये कि कोई भी खड़ा होकर नया मत पंथ चला देता है। इसमें कमाल ये है कि अब तो बहुत सारे मत-पंथ की ओफिसियल वेबसाइट भी है। जुड़ना है तो बस एक क्लिक कीजिये।

जैसे अभी हाल ही में एक नये मत की खबर समाचार पत्रों की सुर्खियाँ बनी हुई हैं "अब्राहमिक धर्म"। तमाम छोटे-बड़े चैनल इस मत की खबर भी दिखा रहे हैं। ऐसे ही जैसे पिछले दिनों ब्रिटेन में एक नया मत रजिस्टर हुआ था 'कोपिज्म'। जैसे सभी धर्मों के अपने-अपने धार्मिक चिन्ह हैं। वैसे ही कोपिज्म का भी अपना धार्मिक चिन्ह है। इनका धार्मिक चिन्ह कॉपी और पेस्ट से मिलकर बना है। इनके धार्मिक चिन्ह में कम्प्यूटर के किबोर्ड का कंट्रोल सी और कंट्रोल वी बना बना हुआ है। अप्रैल 2012 में जब इस धर्म के अनुसार पहली शादी हुई तो इसमें चर्च और पादरी की जगह एक कंप्यूटर ने अपनी भूमिका निभाई और शादी में सभी लोगों ने अपनी उपस्थिति ऑनलाइन दर्ज कराई।

लेकिन हमारा आज का विषय दूसरा है और वह है- अब्राहमिक धर्म। क्योंकि अभी हाल ही में मिस्र देश में धार्मिक एकता के लिए शुरू हुई मुहिम में मस्जिद अल अज़हर के सर्वोच्च इमाम अहमद अल तैय्यब ने अब्राहमी धर्म की खूब आलोचना की है। उनकी आलोचना ने अब्राहमी धर्म को एक बार फिर से सुर्खियों में ला दिया है। इस नये मत धर्म को लेकर बीते एक साल से अरब देशों में सुगबुगाहट देखने को मिली है। हालाँकि साथ ही ये भी कहा जा रहा है कि अभी तक अब्राहमी मत के अस्तित्व में आने की कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। ना तो इस मत की स्थापना के लिए किसी ने नींव रखी है और ना ही इसके अनुयायी मौजूद हैं। इतना ही नहीं, इसका कोई धार्मिक ग्रंथ भी उपलब्ध नहीं है। फिर भी ये मत चर्चा का विषय बना हुआ है। फिलहाल इसे एक प्रोजेक्ट की तरह माना जा सकता है।

जैसे आज से कुछ सालों पहले स्मार्टफ़ोन की चर्चा हुआ करती थी या इलेक्ट्रिक वाहन की। ठीक ऐसे ही इस प्रोडक्ट यानि मत पर विचार और चर्चा चल पड़ी है। कारण इस प्रोजेक्ट के तहत पिछले कुछ समय में इस्लाम, ईसाई और यहूदी- इन तीनों मत में शामिल एक समान बातों को लेकर अब्राहम के नाम से मत बनाने की कोशिशें शुरू हुई हैं, तीनों ही अब्राहम को अपना पैगंबर मानते हैं।

तो अब क्या ये तीनों एक साथ एक जगह और एक पैगम्बर की पूजा किया करेंगे? इस सवाल का जवाब है, नहीं! क्योंकि अब्राहम मत की आरम्भ में ही भ्रूण हत्या हो चुकी है। इस पर सभी बंटे हुए नजर आ रहे हैं। अगर इसका कारण तलाश करें तो ज्यादा गहराई में जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि ईसाई और इस्लाम दोनों ही राजनितिक साम्राज्यवादी अवधारणा है। जिन्हें आस्था का नाम देकर धर्म-भीरु समाज के बीच धर्म के आवरण में लपेटकर आगे बढाया गया। यूरोप के ईसाइयों और अरब के मुसलमानों के बीच सात बड़े युद्ध हुए जिन्हें सलीबी युद्ध, ईसाई धर्म युद्ध, क्रूसेड अथवा क्रूश युद्ध कहा जाता है।

भयंकर रक्तपात हुआ और दोनों ही एक-दूसरे पर अपनी-अपनी विचारधारा थोपने में लगे रहे। जब यूरोप ने आधुनिक हथियार बना लिए तब इस्लाम के लोगों ने अपने पांव पीछे खींचे। अब पिछले एक साल पहले इस मत को लेकर फिर चर्चाओं का दौर शुरू हुआ है और इसको लेकर विवाद भी देखने को मिले। मस्जिद अल अज़हर के सर्वोच्च इमाम अहमद अल तैय्यब ने इसे साफ़ नकारते हुए कहा कि वे निश्चित रूप से दो धर्मों, इस्लामी और ईसाई के बीच भाईचारे को भ्रमित करने और दो धर्मों के मिश्रण और विलय को लेकर उठ रही शंकाओं के बारे में बात करना चाहते हैं। उन्होंने कहा ईसाई धर्म, यहूदी धर्म और इस्लाम को एक ही धर्म में मिलाने की इच्छा रखने का आह्वान करने वाले लोग आएंगे और कहेंगे कि सभी बुराईयों से छुटाकार दिलाएंगे। इसके जरिए जिस नए धर्म के निर्माण की बात हो रही है, उसका ना तो कोई रंग है और ना ही उसमें कोई स्वाद या गंध।

यानि इस्लाम के इमाम मौलवी और मौलाना या इन्हें मजहबी सेल्समेन कहें तो ये इसे एक सिरे से ख़ारिज कर रहे हैं। इसका कारण भी हो सकता है कि एक तो 14 सौ साल कत्लेआम मचाकर इस्लाम को खींचकर यहाँ तक लाये। दूसरा आसमानी किताब का रट्टा मारा, अब अचानक दूसरी कोई किताब रटनी पड़ेगी। इस उम्र में याद हो, ना हो, तो धंधा एकदम चौपट हो जायेगा, तो इनका व्यक्तिगत विरोध जायज है। तीसरा शराब-शबाब जन्नत उसमें किलोलें करती हूरें यानि सपने बेचने की दुकान ये लोग अचानक कैसे बंद करें? ये तो ऐसे है कि किसी पुश्तेनी तम्बाकू बेचने वाले से जाकर कहें कि तू अब कंप्यूटर बेचने का कारोबार कर?

मौलाना ही क्यों अब्राहम मत को लेकर पादरी भी भड़क गये और मिस्र के कॉप्टिक पादरी, हेगोमेन भिक्षु नियामी ने कहा कि अब्राहमी धर्म, धोखे और शोषण की आड़ में एक राजनीतिक आह्वान है।

शेष पृष्ठ 7 पर

आबकारी विभाग की नई नीति के प्रभावों की समीक्षा

दिल्ली को नशे की राजधानी बना रही है – दिल्ली सरकार

मानवजाति को शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक, पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक हर स्तर पर पतित करने वाले हर प्रकार के नशे का आर्य समाज सदा से विरोध करता आ रहा है। गत वर्ष भारत की राजधानी दिल्ली में दिल्ली सरकार द्वारा जब शराब की बिक्री को लेकर नई आबकारी नीति की घोषणा की थी तब भी आर्य समाज ने इसका शान्ति पूर्वक विरोध किया था और आज जब सरकार ने दिल्ली के हर वार्ड में, गली मोहल्ले में शराब की बिक्री की व्यवस्था शुरू की है, हम आज भी इस अनैतिक, अमानवीय और अनर्थकारी कदम का पुरजोर विरोध करते हैं, दिल्ली सरकार से आर्य समाज अपील करता है कि दिल्ली को नशे की राजधानी बनाने से बाज आए .... वरना दिल्ली में रहने वाले हर आयु वर्ग के लोगों की बहुत बडी हानि हो जाएगी, वैसे तो ये सरकार बिजली, पानी, बसों में महिलाओं की यात्रा नि:शुल्क करके दिल्ली वासियों की हितैषी बन रही है, वहीं नई आबकारी नीति के तहत राजस्व बढ़ाने के लिए दिल्ली वासियों के जीवन को बर्बाद करने का खेल खेल रही है, अब गली-मोहल्लों में, घर-घर विषैला शैतान पहुंचेगा, सबकी सुख, शान्ति, चैन, स्वास्थ्य, धन आदि को सरेआम नष्ट करेगा, इसलिए दिल्ली वासियों सहित दिल्ली सरकार से आर्य समाज की अपील है कि स्वयं बचें और दिल्ली को बचाएं इस नशे रूपी विषैले शैतान से .....

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार शराब के सेवन के कारण लीवर सिरोसिस, डिप्रेशन, पेनक्रिया टाईटिस और बेचैनी जैसी बड़ी और गम्भीर बीमारियों का आक्रमण शरीर पर बड़ी तेजी से होता है और इसके पहले कि इंसान शराब पीने से मिलने वाले तथाकथित मजे से बाहर निकले, ये बीमारियां अपनी जड़ जमा चुकी होती हैं। महिलाओं में गर्भाशय से जुड़ी अनेक समस्याएं सिर्फ शराब के कारण होती हैं। आजकल सबसे बड़े जानलेवा कारण बनकर उभरे आत्महत्या को सीधे-सीधे शराब से जोड़कर देखा जा रहा है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि शराब का सीधा बीमारी के रूप में पड़ने वाला असर कुछ बीमारियों के रूप में ही सामने आता है, लेकिन इसका सबसे बड़ा नुक्सान व्यक्ति के व्यवहार में आया हुआ परिवर्तन होता है जो शराब पीने वालों के जीवन को सीधे-सीधे प्रभावित करता है। इससे उसके व्यक्तिगत जीवन से लेकर पेशेवर जीवन तक में बहुत विकार उत्पन्न हो जाते हैं, जिसे सम्भाल पाना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इसमें उसका आत्महत्या वाली प्रवृत्ति का बढ़ना और उसका हिंसक हो जाना बड़ा कारण है।

युवाओं को अपराधी बनाती शराब

यूं तो शराब हर आयु वर्ग के लिए शरीरिक, बौद्धिक, मानसिक, पारिवारिक, समाजिक हर स्तर पर पतन का कारण है, लेकिन विशेष तौर पर युवा शक्ति के लिए शराब हर तरह से अत्यंत हानिकारक है, जानलेवा है, उनकी उन्नति प्रगति की राह में अवरोधक है। आज के युवा को अपराध जगत में झोंकने का शराब एक बड़ा कारण सिद्ध हो रही है। लेकिन फिर भी दिल्ली सरकार अपनी नई आबकारी नीति को दुरुस्त करने के लिए शराब को घर घर पहुंचाने के अपने मकसद में कामयाब होती नजर आ रही है। सरकार यह भूल रही है कि शराब एक ऐसा विषैला शैतान है, यह जिस व्यक्ति या परिवार को ग्रस लेता है वह तहस नहस हो जाता है।

कैंसर से शराब का रिश्ता खतरनाक

शराब को मुंह, नाक, गले, पेट, लीवर के सबसे बड़े कैंसर कारक के रूप में देखा जाता है। एक आंकड़े के मुताबिक पूरी दुनिया में कैंसर से होने वाली मौतों में 4 फीसदी से लेकर 30 फीसदी तक (विकसित और विकासशील देशों में अलग-अलग अनुपात में) शराब के कारण हुए कैंसर को ही सबसे बड़ा कारण पाया गया है।

महिलाओं की दुश्मन है शराब

महिलाओं में जैसे-जैसे शराब पीना लोकप्रिय हो रहा है, उनमें स्तन कैंसर के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। डॉक्टर इसके पीछे सीधे तौर पर शराब को जिम्मेदार मानते हैं। स्तन कैंसर के बड़े कारण के रूप में शराब के लगातार कुख्यात होने के पीछे कारण यह है कि एक अध्ययन में ये बात निकलकर सामने आई है कि कोई महिला सिर्फ एक पैग रोज पीना शुरू कर देती है तो उसे स्तन कैंसर होने का खतरा 4 फीसदी बढ़ जाता है, लेकिन अगर महिला द्वारा शराब पीने की मात्रा बढ़ जाए तो ये खतरा 40 से 50 फीसदी तक बढ़ जाता है। यानी सीधे तौर पर कहें तो शराब का रेगुलर सेवन करने वाली महिलाओं में आधी महिलाओं को स्तन कैंसर होने का तेज खतरा होता है।

आत्महत्या के पीछे शराब

देश में आत्महत्या के आंकड़े लगातार बढ़ते जा रहे हैं। माना जा रहा है कि आजकल की तनावग्रस्त जिन्दगी इसके लिए सबसे अधिक जिम्मेदार है जहां कोई खुद को सुरक्षित नहीं महसूस कर रहा है। इसी तनाव में लोग शराब को एक सहारे के रूप में अपनाते हैं जो इनका तनाव और अधिक बढाने का काम करता है। अंतत: शराब डिप्रेशन और अवसाद को बढ़ावा देती है। अंत में ज्यादातर मामलों में ऐसे लोग आत्महत्या को अपना अंतिम उपाय मानकर जिन्दगी ख़त्म कर लेते हैं।

आजकल लोगों के पास तनाव के बहुत से कारण हैं। लोग व्यापार में असफलता, वैवाहिक जीवन में असफलता, घर के सम्बन्धों में असफलता, परीक्षा या नौकरी में असफलता जैसे कारणों से तनावग्रस्त रहने लगे हैं। ऐसे लोग साथियों के साथ शराब को इस तनाव से मुक्ति पाने का साधन समझते हैं जो अंतत: इन्हें और अधिक तनाव में ले जाता है।

आत्महत्या की घटनाओं के आंकड़े बताते हैं कि बड़ी संख्या में आत्महत्या करने वालों ने शराब पीने के बाद ही आत्महत्या की। ऐसे में माना जा सकता है कि शराब ने ऐसे लोगों में तात्कालिक अवसाद की मात्रा बहुत अधिक बढ़ा दी जिसे वे बर्दाश्त न कर सके और अपनी जीवनलीला खत्म कर ली।

शराब की इतनी खामियां होने के बावजूद भी दिल्ली सरकार इस विनाशकारी जहर को घर-घर पहुंचा रही है। दिल्ली हाईकोर्ट ने बुधवार को दिल्ली सरकार से जानना चाहा कि वह कैसे सुनिश्चित करेगी कि न आबकारी नीति के तहत घर पर शराब की आपूर्ति करने के दौरान कम उम्र (वैध उम्र 21 साल से कम) के लोगों तक शराब नहीं पहुंचेगी। चीफ जस्टिस डीएन पटेल और जस्टिस ज्योति सिंह की पीठ ने दिल्ली सरकार से यह भी पूछा कि शराब की होम डिलिवरी का ऑर्डर करने के वाले व्यक्ति की उम्र को सत्यापित करने की क्या प्रक्रिया है। पीठ ने दिल्ली सरकार के वरिष्ठ अधिवक्ता राहुल मेहरा से पूछा कि आप खरीददार की उम्र को कैसे सत्यापित करेंगे? आपको इस सवाल का जवाब देना चाहिए। आप यह नहीं कह सकते कि इसका जवाब नहीं दे सकते।

मेहरा ने पीठ के समक्ष कहा था कि यह मौजूदा नियमों में केवल संशोधन है और इसे अभी प्रभाव में आना है। मेहरा ने कहा कि जब भी यह प्रभाव में आएगा आधार नंबर देने या आयु प्रमाणित करने वाले अन्य दस्तावेज दिखाने का प्रावधान होगा। नई नीति के तहत दिल्ली में शराब पीने की वैध उम्र 21 साल होगी। अदालत भाजपा सांसद प्रवेश साहिब सिंह वर्मा की याचिका पर सुनवाई कर रही है जिन्होंने दिल्ली सरकार की नई आबकारी नीति को चुनौती दी है, जिसमें शराब की होम डिलिवरी का प्रावधान है। वर्मा की ओर से पेश अधिवक्ता ने कहा कि उन्होंने इस प्रावधान को चुनौती दी है क्योंकि उम्र की निगरानी करने की प्रक्रिया नहीं होने की वजह से शराब की आपूर्ति कम उम्र के लोगों और सार्वजनिक स्थानों पर भी हो सकती है।

याचिकाकर्ता द्वारा शराब की होम डिलिवरी होने पर घर के बच्चों पर दुष्प्रभाव पड़ने संबंधी चिन्ता जताए जाने पर दिल्ली सरकार का पक्ष रख रहे वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि व्यक्ति दुकान से भी शराब खरीद कर घर लाता है ऐसे में बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव में अंतर नहीं होगा। सिंघवी और मेहरा ने कहा कि केवल तरीका बदला है, होम डिलिवरी की व्यवस्था पिछले 20-30 साल से मौजूद है। उन्होंने कहा कि पहले शराब की होम डिलिवरी के लिए ईमेल या फैक्स के जरिए ऑर्डर देना पड़ता था लेकिन अब यह मोबाइल ऐप के जरिए किया जाएगा। इस दौरान अदालत को सूचित किया गया कि दिल्ली सरकार द्वारा दाखिल जवाब रिकॉर्ड पर नहीं है। इस पर अदालत ने जवाब को रिकार्ड पर दर्ज करने का निर्देश देते हुए मामले को सूचीबद्ध करवा दिया। अन्त में शराब की बिक्री की इस निन्दनीय, घृणित और विनाशकारी योजना को क्रियान्वित करने के बजाय दिल्ली सरकार को इसे पूरी तरह से निरस्त करना चाहिए। जिससे दिल्ली भारत की राजधानी के रूप में ही गौरवान्वित रहे न कि नशे की राजधानी बने।

– आचार्य अनिल शास्त्री

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में हरियाणा दिवस के अवसर पर वैदिक हरयाणा कार्यक्रम सम्पन्न

हरियाणा आर्य समाज का गढ़ रहा है यहां के लोग वैदिक संस्कृति के सबसे निकट – विनय आर्य

धर्म की रक्षा करने के लिए हमें ऋषि दयानन्द जी के दिखाए रास्ते पर चलना होगा – मा. रामपाल

1 नवंबर 2021 को हरियाणा दिवस पर आर्य बाल भारती विद्यालय पानीपत में वैदिक हरियाणा के नाम से कार्यक्रम कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मास्टर रामपाल जी की अध्यक्षता एवं वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री यशवीर आर्य जी वेद प्रचार अधिष्ठाता के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

उद्बोधन देते दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, मंचस्थ अधिकारीगण, कार्यकर्ताओं का सम्मानित करते हरियाणा सभा के प्रधान मा. रामपाल जी एवं उपस्थित आर्यजन।

मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने जातिवाद को त्यागने व अपने दलित-पिछड़े समाज के लोगों को गले लगाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा की हरियाणा आर्य समाज का गढ़ रहा है यहां के लोग वैदिक संस्कृति के सबसे निकट हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती जी जब हरियाणा में प्रचार करने के लिए आए तो उन्होंने यहां के लोगों का रहन सहन, सात्विक खानपान देखा तो कहा कि यह लोग तो आर्य ही हैं, यहां के लोगो ने स्वामी जी की प्रेरणा से गौरक्षा के लिए भारत की सबसे पहली गौशाला रेवाड़ी में खोली। परंतु धीरे-धीरे हरियाणा में भी विधर्मी और देश विरोधी ताकतें अपने पैर पसार रही हैं जो यहां के लोगों में मांसाहार,नशा व एक षड्यंत्र के द्वारा जातिवाद का जहर घोल रही हैं। ऐसे समय में देश व प्रदेश की रक्षा करने का आर्य समाज का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है। उन्होंने स्वामी ओमानंद सरस्वती जी, भगत फूल सिंह जी द्वारा समाज हित में किए गए कार्यों का भी उल्लेख करते हुए इन महान विभूतियों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

गोहाना से आये विकास आर्यवीर जी ने आर्य समाज के विद्वानों कार्यकर्ताओं के द्वारा जातिवाद व नशे के विरुद्ध किए गए कार्यों, बलिदानों का वर्णन किया उन्होंने स्वामी ओमानंद जी, आचार्य बलदेव जी, भगत फूल सिंह जी, पंडित सोमनाथ जी, चौधरी छोटू राम जी आदि अनेको के उदाहरण देकर सामाजिक एकता व धर्म पर चलने का संदेश दिया। इस अवसर पर उन्होंने पिछड़े व दलित समाज के लोगों द्वारा समाज व राष्ट्रहित में किए गए कार्यों का भी उल्लेख करते हुए कहा कि आर्य समाज के नेतृत्व में हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी आंदोलन में इस समाज के लोगो ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया व अपना बलिदान दिया। उन्होंने कहा कि हम सब की परंपरा एक है हमारे पूर्वज एक हैं इसलिए आपस में जातीय भेदभाव नहीं करना चाहिए और भाई चारे की भावना से एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए।

कार्यक्रम में पाकिस्तान से आए हुए हिन्दू शरणार्थी श्री धर्मवीर जी की अध्यक्षता में शामिल हुए। धर्मवीर जी ने लोगों को बताया कि कैसे उन पर पाकिस्तान में अत्याचार हुए और कैसे उन्हें अपनी भूमि, धन-संपत्ति छोड़कर पाकिस्तान से भागना पड़ा। उन्होंने कहा की यदि भारत के लोग अभी नहीं संभले तो पाकिस्तान जैसी स्थिति भारत में भी हो सकती है।

श्री जगदीश आर्य जी ने भी पाखंड और अंधविश्वास के विषय पर लोगों को

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज खूटापानी के संयुक्त तत्त्वावधान में वैदिक ज्ञान गंगा विश्व कल्याण यज्ञ के अवसर पर

400 परिवारों के 1200 लोगों ने हिन्दू धर्म में की वापसी, पाँव धोकर किया गया स्वागत

छत्तीसगढ़ में पत्थलगाँव के खूँटापानी में 400 परिवार के 1200 लोगों ने हिन्दू धर्म में वापसी की है। इन लोगों को तीन पीढ़ी पहले ईसाई बनाया गया था। दो दिन के कार्यक्रम में हजारों की संख्या में लोग इकट्ठा हुए। ये कार्यक्रम आर्य समाज और हिन्दू समाज द्वारा आयोजित किया गया। इस दौरान भाजपा के प्रदेश मंत्री व ऑपरेशन घर वापसी के प्रमुख प्रबल प्रताप सिंह जूदेव ने सभी लोगों का पाँव धोकर हिन्दू धर्म में फिर स्वागत किया।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि द्वारा आयोजित वैदिक ज्ञान गंगा विश्व कल्याण यज्ञ का हिस्सा बनते हुए प्रदेश मंत्री व जशपुर राजपरिवार के प्रबल प्रताप सिंह ने कहा कि हिन्दुत्व की रक्षा करना उनके जीवन का एकमात्र संकल्प है। उन्होंने बताया कि घर वापसी करने वाले अधिकांश परिवार बसना सरा पाली के थे। उन्होंने कहा आज इतनी अधिक संख्या में लोगों की उनके मूल धर्म में वापसी अच्छे संकेत हैं। किसी की मजबूरी का फायदा उठाकर किया गया काम कभी टिकाउ नहीं होता है। मिशनरियों ने गरीबों की मजबूरी का फायदा उठाकर उनका धर्मांतरण किया था। शिक्षा व स्वास्थ्य के नाम पर धर्म का सौदा किया था, पर हम लगातार इन षड्यंत्रों को बेकनाब करते रहेंगे।"

वहीं हिन्दू धर्म में लौटने वाले परिवारों ने बताया कि करीब 3 पीढ़ी पहले उनके पूर्वजों का धर्मांतरण हुआ था। उस वक्त वे बेहद गरीब थे और मिशनरियों की ओर से खेती में कुछ आर्थिक मदद और बीमारियों में इलाज की सहायता मिलने के कारण धर्म परिवर्तन किया था। पर अब वे जागरूक हो गए हैं।

बता दें कि इस पूरे घर वापसी अभियान में 100 परिवार स्थानीय थे और 300 परिवार बसना सरा पाली से थे। इन सबको 20 बसों में बैठाकर लाया गया था। पूरे कार्यक्रम में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। ये दो दिवसीय कार्यक्रम था। इसके पहले दिन खूँटापानी में आर्य समाज द्वारा कलश यात्रा निकाली गई थी जिसमें बहुत महिलाएँ शामिल हुई थीं। धर वापसी एवं विश्व कल्याण यज्ञ आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री अंशुदेव जी के निर्देशन में किया गया।

आर्य समाज हापुड़ के 131वें वार्षिकोत्सव पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री जी का विशेष उद्बोधन

उज्ज्वल भविष्य के लिए रिश्तों का सम्भालना जरूरी

आज संयुक्त परिवार प्रणाली बिखर रही है, हमारे रिश्ते-नाते लगभग समाप्त होते जा रहे हैं। अत: हमें अपने सिकुड़ते परिवारों को बचाकर भविष्य को सुरक्षित करने के लिए पारिवारिक रिश्तों को बढ़ाना होगा। आज हमारे परिवारों से भाई-भाई, भाई -बहिन, चाचा-ताऊ, बुआ-मामा की रिश्ते धीरे धीरे समाप्त होते जा रहे हैं, जिसके कारण हिन्दू समाज का भविष्य खतरे में नज़र आ रहा है, इसके लिए हमें अपने रिश्तों को बढ़ाना चाहिए अर्थात परिवार को सीमित न रखकर बढ़ाना चाहिए।

दूसरा अपनी सामर्थ्य के अनुसार खेती की जमीन अवश्य रखनी चाहिए, जो खेती स्वयं नही कर सकते वह दूसरों से कार्य कराए। यह भी भविष्य को सुरक्षित रखने का एक उपाय है। हमें अपने से दूर होते जा रहे एक बड़े वर्ग को भाई-चारा बनाकर, उसकी सहायता करते हुए अपने नजदीक रखना होगा। तन, मन, धन से जिसके पास जितनी सामर्थ्य है उसे सामाजिक एकता बनाये रखने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें अपने आदत बनानी होगी कि यथा सम्भव अपने कार्य अपने वर्ग के व्यक्तियों से ही कराकर उन्हें मजबूत करें।

ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने दिनांक 19 नवम्बर, 2021 को आर्य समाज हापुड़ के 131वें वार्षिकित्सव पर आयोजित युवा शक्ति निर्माण सम्मेलन के अवसर पर व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि इतिहास का चिन्तन करने पर मैं पूर्ण सच्चाई के साथ कह रहा हूँ कि जिस प्रकार स्वतंत्रता की लड़ाई एक मात्र महर्षि दयानंद जी व उनके आर्य समाज ने लड़कर स्वतंत्रता दिलाई थी, उसी प्रकार आने वाले समय को सुरक्षित रखने के लिए आर्य समाज की ओर आना होगा। देश, धर्म, समाज के लिए जो कार्य आर्य समाज ने किए है और कर रहा है, करता रहेगा ऐसी सोच और किसी संगठन के पास नही है। हिन्दू समाज के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए हम दृढ़ संकल्प हैं।

इस अवसर पर आचार्य हरिशंकर अग्निहोत्री ने अपने प्रवचन मे कर्म फल के सिद्धांत पर वेद मंत्रों की व योग दर्शन के माध्यम से बताया कि जीव अपने कृत्य कर्म के फल से बच नही सकता। निष्काम कर्म अर्थात ईश्वर को समर्पित मोक्ष को प्राप्त करने के लिए किए कर्म को कहते हैं। सकाम कर्म अर्थात् सांसारिक सुखों को प्राप्त करने के लिए किए गए कर्म को कहते है। सकाम कर्म प्रारब्ध और सिंचित दोनों प्रकार के होते हैं। यह अच्छे कर्म व बुरे कर्म दोनों का फल इसी जीवन में तथा अगले जन्म में भोगना होता है। अत: मनुष्यों को भोग योनि से बचने के लिये निष्काम कर्म करना चाहिए।

डॉ अंजली आर्य ने अपनी मधुर वाणी से ईश्वर भक्ति के ज्ञानवर्धक भजनों का गायन किया।

कार्यकर्म का कुशल संचालन आर्य समाज के युवा मंत्री अनुपम आर्य ने किया। प्रधान नरेंद्र आर्य ने सभी विद्वानों व श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

ज्ञातव्य है कि आर्य समाज हापुड़ भारतवर्ष के सबसे अधिक सुंदर, व्यवस्थित, प्राकृतिक रूप से भव्य समाज है। यहां एक भव्य ऋषि दयानंद दीर्घा दो वर्ष पूर्व स्थापित की गई है। दीर्घा का लोकार्पण आर्य नेता महामहिम राज्यपाल सिक्किम श्री गंगा प्रसाद जी के द्वारा किया गया था। आर्य जगत के लिए यह ऋषि दयानंद दीर्घा ज्ञानवर्धक व दर्शनीय है। आर्य समाज हापुड़ मे पूरे वर्ष वेद प्रचार के, समाज सेवा के, देश की विभिन्न समस्याओं पर कार्यक्रम होते रहते है।

- अनुपम आर्य, मन्त्री

131वें वार्षिकोत्सव पर उद्बोधन देते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्यसमाज में पधारने पर ऋषि दयानन्द दीर्घा का स्मृतिचिह्न प्रदान करते आर्यसमाज के अधिकारीगण एवं दयानन्द दीर्घा का अवलोकन करते आर्यजन

अ. भा. दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी के जन्मदिवस पर यज्ञ

19 नवम्बर को संघ द्वारा संचालित दयानन्द आर्य विद्या निकेतन भामल एवं आर्य गुरुकुल रानी बाग के बच्चों ने किया यज्ञ

नाड़ी विज्ञान

गतांक से आगे -

दुष्ट नाड़ी का लक्षण - नाड़ियों का रक्त पूर्ण होकर चलना, तन्तु के समान स्पन्दन का मालूम पड़ना, अपने स्थान पर वात, पित्त, कफादि का अंगूठे के नीचे प्रकोष्ठ पर तर्जनी, मध्यमा एवं अनामिका के नीचे वैषम्य स्पन्दन का प्रतीत होना या स्थान छोड़कर चलना, अधिक तेजी से चलना, प्रकुपित वातादि के लक्षणों से परिपूर्ण रहना, अत्यधिक कठिन मालूम पड़ना, अधिक मन्द चाल से चलना, चिपचिपा प्रतीत होना, कुटिलता के साथ तिरछे चलना ये सब दोष वातादि के द्वारा दूषित सभी नाड़ियों के दुष्ट लक्षण हैं।

शारीरिक व्याधियों या रोगों में नाड़ी की गति की पहिचान

ज्वर के पूर्वरूप में नाड़ी गति- ज्वर से पहले अङ्गग्रह शरीर में फूटन एवं अकड़न होती है। उस समय नाड़ी मन्द गति में कूद-कूदकर चलती है। यदि ज्वर के साथ दाह भी हो तो प्रवल वेग से कूद-कूदकर तेजी से मेंढ़क आदि की तरह कूद-कूदकर चलती है, अर्थात् ज्वर आने से पूर्व इस प्रकार की गति होती है।

....वात की स्वाभाविक अवस्था में नाड़ी की गति मृदु, सूक्ष्म स्थित तथा मन्द होती है और रात के प्रकोप में नाड़ी की गति स्थूल, कठिन एवं शीघ्रगामी स्पन्दन करने वाली होती है। वात प्रकोप के कुछ समय बाद सायंकाल, भोजन की जीर्णावस्था ग्रीष्म ऋतु आदि तथा अन्य वात प्रकोपक कारणों से वात प्रकुपित होने पर नाड़ी की गति मोटी, कड़ी तथा जल्दी-जल्दी चलने वाली होती है। स्वास्थावस्था में सूक्ष्म, स्थिर एवं मन्द गति वाली होती है। वात के संचय काल में भी नाड़ी वात की तरह चलती है।.....

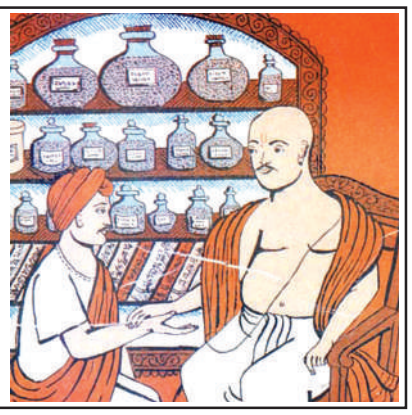

सन्निपात रूपेण के पूर्व रूप में नाड़ी की गति- सन्निपात ज्वर के उत्पन्न होने के पूर्व सभी प्रकार की नाड़ियों की गति प्रकट होती है। अर्थात् जौक तथा सांप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी या कौवे की तरह फुदकती हुई तथा कभी हंस तथा मोर की तरह स्थिर मन्द एवं लवा तीतर आदि की तरह तिरछी गति से चलती है।

ज्वर का प्रकोप होने पर धमनी या नाड़ी उष्ण तथा तेज गति से चलती है। ज्वर में पित्त का प्रकोप होता है और पित्त के प्रकोप से नाड़ी उष्ण तथा तीव्र गति वाली होती है। कफ ज्वर तथा वात ज्वर में क्रमश कफ नाड़ी की गति तथा वात नाड़ी की गति होती है।

वातोल्वण वात ज्वर में नाड़ी की गति- वात प्रकोप से होने वाले ज्वर में सामान्यत: ज्वर की नाड़ी उष्ण एवं तेजी के साथ-साथ टेढ़ी तथा तिरछी गति से चलती है।

रमण काल के बाद नाड़ी की गति- स्त्री प्रसंग या मैथुन के बाद नाड़ी की गति शेष रात तथा प्रात:काल तक दीपक की ज्वाला की तरह गर्म होती है। ज्वर में उष्ण एवं बेगवती नाड़ी होती है। इसमें दीपशिखा की तरह स्थिर तथा गर्म होती है। यही ज्वर तथा स्त्री प्रसंग या मैथुन करने के बाद गति में भेद है।

वात की साम्यावस्था में नाड़ी की गति- वात की स्वाभाविक अवस्था में नाड़ी की गति मृदु, सूक्ष्म स्थित तथा मन्द होती है और रात के प्रकोप में नाड़ी की गति स्थूल, कठिन एवं शीघ्रगामी स्पन्दन करने वाली होती है। वात प्रकोप के कुछ समय बाद सायंकाल, भोजन की जीर्णावस्था ग्रीष्म ऋतु आदि तथा अन्य वात प्रकोपक कारणों से वात प्रकुपित होने

- शेष पृष्ठ 7 पर

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

Thus we find there is hardly any kind of public service in which Swami Dayanand did not feel interested. If today we find so many people devoted to the welfare of their country, it is because of the inspiration they got from Swami Dayanand. Swami Dayanand's message to public workers was this: “Do not be contented merely with talk, for no good ever comes of it. Nor try merely to pass resolutions, for they do not carry people very far. But always strive to put into practice what you feel to be true. Learn to suffer for your convictions whenever the need be."

Swami Dayanand did not depend merely on individual efforts to carry into effect what he had taught. But he established theArya Samaj for this purpose. There are about two thousand Arya Samajees all over the world at present and the number of its members is about ten lakhs. It has more than one thousand missionaries, some of whom are paid while others are honorary workers. It runs about six colleges and many high schools, Anglo-Vernacular middle schools and primary schools. It has colleges where the indigenous system of medicine is taught. But besides these it has industrial schools, and schools for teaching only Sanskrit and Theology.

The Gurukulas, which are residential schools imparting education through the medium ofHindi, are many. These are situated away from cities, and every student there has take a vow of celibacy up to the age of twenty-five. They are not given many chances of visiting the cities. Besides these theArya Samaj runs some schools, colleges and Gurukulas for girls.

Swami Dayanand was in favour of the abolition of untouchability. He wanted people to treat the so-called depressed classes well. It is said at one place a barber brought food for him and Swami Dayanand partook of it without any hesitation. At another place a low-caste Hindu came to hear his lecture. As soon as the people saw him, they tried to send him away. But when Swami Dayanand came to know of it he took them to task for their narrow-mindedness. “What right had you," he asked, “to send this man away? He has as much right to hear my lectures as any high-caste Hindu. As the air is meant for all, so are the Vedas. As the sun gives heat and light to everybody, so does Dharma work for the good of all. All are welcome to listen to my lectures on Dharma. They are open to all, the rich and the poor, the great and the small."

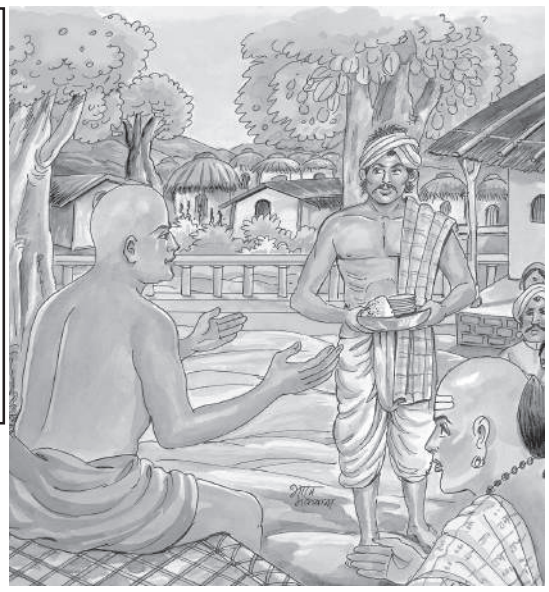

But it is not only educational work that the Arya Samaj does. It also runs orphanages where little boys and girls are given education to fit them for some career in life. To relieve the sick it has established charitable dispensaries and hospitals, where thousands of suffering persons are treated with care. The number of widows' homes which it has started is quite large. There widows are taught to read and write and to learn some handicraft.

But what the Arya Samaj has done directly is nothing when compared with what it has inspired others to do. Its indirect influence is far greater than its direct influence. It is said that there is hardly any noble work of public good in India at present which does not derive its influence from the Arya Samaj. Today we fine in India many agencies for public welfare. Most ofthese are the result of Swami Dayanand's efforts.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

प्रेरक प्रसंग

एक आग्नेय पुरुष : स्वामी योगेन्द्रपाल

गतांक से आगे –

उन्होंने कई छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें पत्रों में क्रमशः छपीं पर पुस्तक रूप में न निकल पाई। रक्तसाक्षी महाशय राजपालजी ने 'कुलियात' योगेन्द्रपाल के नाम से उनका सम्पूर्ण साहित्य छापने की घोषणा की थी, परन्तु मैंने इसे कहीं देखा नहीं। लगता है कि छपी ही नहीं। उनका साहित्य अब कहीं मिलता ही नहीं। दीनानगर के स्वर्गीय लाला ईश्वरचन्द्रजी पहलवान के पास उनकी कई पुस्तकें थीं। मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्री यशपालजी ने दस वर्ष पूर्व उनसे लेकर पढ़ी थीं। लालाजी के निधन पर मैंने ये पुस्तक प्राप्त करने का प्रयास किया, परन्तु न मिलीं। न जाने कहाँ गईं। मेरे पास केवल दो-तीन हैं।

आपपर अनेक अभियोग चलाये गये। एक बार जालन्धर में आपका भाषण था। मुसलमानों ने अभियोग चला दिया। आपके वारंट निकल गये। वकीलों ने निःशुल्क केस लड़ा। आप मुक्त हो गये।

ग्रामों में ग्रामीणों जैसा रहते। खाने-पीने की चिन्ता ही न करते थे। न ओढ़ने की चिन्ता और न बिछाने का विचार। एक बार आर्यसमाज मलसियाँ जिला जालन्धर के उत्सव पर गये। शीत ऋतु थी। लोग बहुत थे। इतनी चारपाइयों का प्रबन्ध न हो सका। आप भूमि पर ही लोगों की भाँति सो गये। ऐसे कर्मवीर तपस्वियों ने आर्यसमाज का डंका बजाया है।

वे ज्ञान का समुद्र थे। धर्मविषय पर ही बातचीत किया करते थे। धर्मचर्चा करते-करते थकते न थे। जब मसलियाँ गये तो लोगों को उनसे इतना प्रेम हो गया कि उन्होंने उनको उत्सव के पश्चात् आने ही न दिया और वे कई दिन तक वहाँ ज्ञान-गंगा बहाते रहे। स्वामी योगेन्द्रपालजी ने कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) के क्षेत्र में बड़ा प्रचार किया। मुसलमान कहते थे। कि शास्त्रार्थ के लिए उनकी खुली चुनौती है, परन्तु जब स्वामी योगेन्द्रपालजी से निरुत्तर होते थे तो उनपर अभियोग चलाते थे। आपने उत्तरप्रदेश में भी कई शास्त्रार्थ किये। बिजनौर में जब उपाध्यायजी मन्त्री थे (तब आप गंगाप्रसाद वर्मा लिखा करते थे।) तब स्वामी योगेन्द्रपालजी का मुसलमानों से एक शास्त्रार्थ हुआ था।

एक बार मिर्जाइयों ने नियोग विषय पर एक अश्लील नावल लिखकर इसे अपने पत्रों में क्रमशः छापा। इसपर स्वामी योगेन्द्रपालजी ने एक पुस्तिका 'मुताह व नियोग' नाम से लिखकर सबकी बोलती ऐसी बन्द कर दी कि 'इस्लाम की तौहीन' का शोर मच गया। अभियोग चला। स्वामीजी विजयी हुए। यह नावल नहीं था, प्रमाणों से परिपूर्ण पुस्तक थी। हिन्दी में छपे तो 70-75 पृष्ठ की होगी।

वे पण्डित लेखरामजी के वीरगति पाने पर डटकर लेखरामनगर (कादियाँ) में पहुँचकर मिर्जा गुलाम अहमद को ललकारने लगे कि निकलो अपने इल्हामी कोठे से, आओ चमत्कार दिखाओ-शास्त्रार्थ कर लो-मेरे प्रश्नों का उत्तर दो। सिंह की दहाड़ ने अन्धविश्वासियों के हृदयों में कम्पन पैदा कर दी। मिर्जा साहब को ऐसा लगा कि फिर से प्राणों का निर्मोही लेखराम कहीं से आ गया।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

संस्कृत वाक्य प्रबोध

ग्राम्यपशुपक्षिवन्यपुशप्रकरणम्

गतांक से आगे – संस्कृत	**हिन्दी**
542. वानरी मृतकमपि बालकं न त्यजति।	बन्दरी मरे हुए बच्चे को भी नहीं छोड़ती।
543. गोपालेन गावो दुग्धाः पयो न वा?	ग्वाले ने गौओं से दूध दुहा वा नहीं?
544. कपिलाया गोर्मधुरं पयो भवति।	कपिला (पीली) गाय का दूध मीठा होता है।
545. अयं वृषभः कियता मूल्येन क्रीतः?	यह बैल कितने मोल से खरीदा है।
546. शतेन रूप्यैः।	सौ रुपयों से।
547. कतिभिः पणैः प्रस्थं पयो मिलति?	कितने पैसों से सेर दूध मिलता है?
548. द्वाभ्यां पणाभ्याम्।	दो पैसों से।
549. पश्य देवदत्त! वानराः कथमुत्प्लवन्ते?	देख देवदत्त! बन्दर कैसे कूदते हैं?
550. अयं महाहनुत्वाद्धनुमान्वर्त्तते।	यह बन्दर बड़ी ठोडीवाला होने से हनुमान् है।
551. एताभ्यां चटकाभ्यां प्रासादे नीडं रचितम्।	इन दो चिड़ियों ने अटारी पर घोंसला बनाया है।
552. अत्राण्डानि धृतानि।	यहां अण्डे धरे हैं।
553. इदानीं तु चाटकैरा अपि जाताः।	अब तो इनके बच्चे भी हो गये हैं।
554. पश्य, विष्णुमित्र! कुक्कुटयोर्युद्धम्।	देख, विष्णुमित्र! मुरगों की लड़ाई।
555. कुक्कुटी स्वान्यण्डानि सेवते।	मुरगी अपने अण्डों को सेवती है।
556. पश्य, शुकानां समूहं यो विरुवन्नु-प्रवर्त्तते।	देख, तोतों के झुण्ड को जो चहचहाता हुआ उड़ रहा है।
557. रात्रौ काका न वाश्यन्ते।	रात में कौवे नहीं बोलते हैं।
558. अरे भृत्योड्डाय ध्वांक्षमनेन पातव्य जलपात्रे चञ्चुं निक्षिप्य जलं विनाशितम्।	अरे नौकर! कौवे को उड़ा दे, इसने पीने के जल के बर्तन में चोंच डालकर जल दूषित कर दिया।
559. वायसेन बालकहस्ताद्रोटिका हृता।	कौवे ने लड़के के हाथ से रोटी ले ली।
560. पश्य, कीदृशं काकोलूकिकं युद्धं प्रवर्त्तते।	देख, किस प्रकार की कौवे और उल्लुओं की लड़ाई हो रही है।
561. अनेन शुकहंसतित्तिरिकपोताः पालिताः।	इसने तोता, हंस, तीतर और कबूतर पाले हैं।
562. वने रात्रौ सिंहा गर्जन्ति।	वन में रात के समय सिंह गर्जते हैं।
563. शार्दूलं दृष्ट्वा सिंहा निलीयन्ते।	शार्दूल को देखकर सिंह छिप जाते हैं।
564. ह्यः सिंहेन गौर्हता।	कल सिंह ने गौ को मार डाला।
565. परश्वो विक्रमवर्मणा सिंहो हतः।	परसों विक्रमवर्मा ने सिंह मारा।
566. द्रष्टव्यं हस्तिसिंहयो रणम्।	देख हाथी और सिंह की लड़ाई।
567. जंगले हस्तियूथाः परिभ्रमन्ति।	जंगल में हाथियों के झुण्ड घूमते हैं।
568. इदानीमेव वृकेण मृगो गृहीतः।	अभी भेड़िये ने हिरन पकड़ लिया।
569. अयं कुक्कुरो बलवाननेन सिंहेन सहाप्याजिः कृता।	यह कुत्ता बड़ा बलवान् है, इसने सिंह के साथ लड़ाई की।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 2 का शेष

कैसा है अरब का नया धर्म जो मच ....

नए धर्म को अस्वीकार करने वालों में वे लोग भी हैं जो इसे वैचारिक तौर पर ठीक मानते हैं लेकिन वे इसे विशुद्ध रूप से राजनीतिक खेमेबंदी के तौर पर देखते हैं, जिसका उद्देश्य विशेष रूप में अरब देशों में इसराइल के साथ संबंधों को सामान्य बनाना और बढ़ाना है। अब इनकी भी अपनी समस्या है पहले यूरोप के लोगों को जीसस का नशा बेचा, अब अचानक ये अगला नशा कैसे बेचें। दूसरा इन ईसाई सेल्समेन ने बड़ी मुस्किल से भारत नेपाल जैसे देशों में ये जो हालेलुइया का कारोबार खड़ा किया वो तबाह हो जायेगा।

दरअसल अब्राहम शब्द का उपयोग पिछले साल सितंबर में संयुक्त अरब अमीरात और बहरीन द्वारा इसराइल के साथ हालात को सामान्य बनाने के समझौते पर हस्ताक्षर के साथ हुआ था। संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके तत्कालीन राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके सलाहकार जेरेड कुशनर द्वारा प्रायोजित समझौते को अब्राहमी समझौता कहा गया था कि मानवता को रास्ता दिखाने के लिए सभी को एक होने के लिए अब्राहम की आवश्यकता है। इसके तीनों धर्म में शामिल एक समान बातों को लेकर पैगंबर अब्राहम के नाम से धर्म बनाने की कोशिशें शुरू हुई थी।

लेकिन हमारा सवाल दूसरा भी कि यूरोप और मध्य एशिया में अब्राहम कहाँ से आया? बताया जाता है कि अब्राहम भगवान श्री राम का अपभ्रंश शब्द है। क्योंकि अगर देखा जाये तो मध्य एशिया और यूरोप में श्री राम जी को ही अब्राहम कहा जाता है। कारण अब्राहम अपने भाई से अलग हुए और राम जी भरत से अलग हुए, अब्राहम ने अपनी पत्नी हागर को निष्कासित करा, जबकि राम जी द्वारा सीता जी को निष्कासित करने की बात पढने को मिलती है। इसी कारण अगर अब्राहम की कहानी पढ़ें या श्री राम जी की दोनों में काफी समानताएं पाई जाती है। बल्कि कई लोगों का मानना है फिलिस्तीन का शहर रामल्लाह जो पहले रामनगर के नाम से श्रीराम जी ने नाम पर था। ऐसे ही राम से अब्राहम कर दिया। यानि ये साफ़ है कि कभी सनातन धर्म जिसकी जड़ें सम्पूर्ण संसार में फैली थीं। अब देर आये दुरुस्त आये या कहो आज नहीं कल इनके ये धार्मिक प्रोजक्ट फेल हो जायेंगे और इन्हें फिर से अपने महापुरुषों श्रीराम- श्रीकृष्ण की शरण में आना ही पड़ेगा।

- सम्पादक

आर्य समाज हरि नगर दिल्ली का वरिष्ठ नागरिक अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज हरि नगर नई दिल्ली द्वारा 11वां वरिष्ठ नागरिक अभिनंदन समारोह 10 अक्टूबर 2021 को मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य सोमदेव शास्त्री जी द्वारा हवन व प्रवचन हुए जिसमें श्राद्ध जैसे विषय पर गहरा से प्रकाश डाला गया तथा समाज के वरिष्ठजनों की महत्व को बताया गया। श्री हरिशंकर गुप्ता जी एवं श्री रमाशंकर जी के मधुर भजन हुए। तदुपरान्त समाज के वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया गया और उन्हें उपहार दिए गए। आर्य समाज की मान्यता के अनुसार जीवित माता-पिता और वृद्धजनों का सम्मान करना ही सच्चा श्राद्ध कहलाता है का विचार प्रस्तुत किया गया।

निर्वाचन समाचार

श्रीमती परोपकारिणी सभा
केसरगंज, अजमेर (राजस्थान)

प्रधान : श्री सत्यानन्द आर्य
मन्त्री : श्री मुनि सत्यजित्
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष नवाल

आर्यसमाज केशवपुरम्
दिल्ली -110035

प्रधान : श्री सत्यवीर पसरीचा
मन्त्री : श्री मनवीर सिंह राणा
कोषाध्यक्ष : श्री प्रताप नारायण

आर्यसमाज राजनगर -2
पालम कालोनी, नई दिल्ली -45

प्रधान : श्री धर्मपाल आर्य
मन्त्री : श्री रत्तन आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री बाबूलाल आर्य

पृष्ठ 5 का शेष

नाड़ी विज्ञान ..

पर नाड़ी की गति मोटी, कड़ी तथा जल्दी-जल्दी चलने वाली होती है। स्वास्थावस्था में सूक्ष्म, स्थिर एवं मन्द गति वाली होती है। वात के संचय काल में भी नाड़ी वात की तरह चलती है।

पित्त ज्वर- पित्त ज्वर में नाड़ी दोषों से भरी हुई सीधी रेखा में अनामिका से तर्जनी तक तथा जल्दी-जल्दी स्पन्दन करती है। नाड़ी के कठिन होने से जल्दी-जल्दी धक्का देती है। चंचलता पूर्वक चलती है, अर्थात् मालूम पड़ता है कि चमड़े को फोड़कर नाड़ी बाहर निकल जाना चाहती है। मलाजीर्ण होने पर नाड़ी अत्यधिक स्पन्दन करने वाली होती है। तात्पर्य यह है कि मल सामपित्त जैसे-जैसे पक्व हो जाता है, वैसे-वैसे नाड़ी काठिन्यादि दोष छोड़कर बार-बार फुर्तीला एवं हल्कापन लिए हुए चलती है।

श्लेष्मा या कुफोल्वण नाड़ी- कफ ज्वर में नाड़ी की गति संचय-काल या प्रकोपक काल में कमल के सूत के समान पतली, मन्द तथा शीतल होती है। अर्थात् कफ के प्रकोप होने पर नाड़ी कमल तन्तु के समान होकर मन्द गति से स्पर्श में शीतल चलती है।

वात पित्तजा नाड़ी- वात पित्तजा नाड़ी की गति वात पित्तजन्य ज्वर में नाड़ी की गति चंचल, तरल ढ़ीली-ढ़ीली या मोटी तथा कठिन सी होकर चलती है। दोनों के साथ-साथ प्रकोप होने से वात की वक्रगति तथा पित्त की सरल गति दोनों ही मध्य गति के अनुसार चलती है। अर्थात् न तो अधिक टेढ़ी-मेढ़ी ही रहती है और न बिल्कुल सरल ही रहती है। बल्कि कुछ टेढ़ी और कुछ सरल होकर चंचलता, कठिनता तथा स्थूलता लिए हुए चलती है।

वातज श्लेष्मिकी नाड़ी- वात श्लेष्मिक ज्वर में दोनों दोषों के समान रूप में प्रकुपित होने पर नाड़ी गर्म होती हुई मन्द गति से हंस तथा मोर की तरह गति वाली चलती है। यदि ज्वर में कफ का प्रकोप कम तथा वात का प्रकोप अधिक हुआ हो तो नाड़ी निरन्तर खर या तेज तथा रुक्ष होकर चलती है।

रुक्ष वातजा नाड़ी- रूक्ष पदार्थो के सेवन करने से प्रकुपित वात में नाड़ी पिण्ड के समान गीली या गांठ की तरह कर्कश प्रतीत होती है।

पित्त श्लेष्मजा नाड़ी- पित्त कफ जन्य प्रकोप से उत्पन्न ज्वर में नाड़ी सूक्ष्म, पतली, स्पर्श में शीतल तथा स्थिर चंचलता रहित होती है। इसमें पैत्तिक नाड़ी के लक्षण का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि पित्त, कफ भिभूत होता है। अर्थात् मिश्रण होने से दोनों नाड़ी की गतियों में समानता आ जाती है। अत: तेजी से अधिक कूदकर कौवे एवं मेंढ़क की तरह होती है।

ज्वर में रक्त एवं मल से पूर्ण नाड़ी के लक्षण- ज्वरावस्था में यदि नाड़ी मध्यमा अंगुली के नीचे गर्म होकर चले तो समझना चाहिए कि वातादि दोष रक्त के साथ मिलकर पूर्ण है। यहां नाड़ी दोष पूर्ण होने के कारण रक्त का भी पित्त के सदृश कार्य होने से तेज गति वाली होती है।

पृष्ठ 4 का शेष

जागरूक किया व इनसे बचने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अंत में जातिवाद के विरुद्ध व धर्म रक्षा के लिए कार्य करने वाले अनेकों कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए मास्टर रामपाल जी ने कहा कि हम सभी को यह सन्देश लेकर जाना है कि हमें जातिवाद के विरुद्ध कार्य करना है व वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करना है, धर्म की रक्षा करनी है इसके लिए ऋषि दयानन्द जी के दिखाए रास्ते पर चलना होगा।

मंच संचालन करते हुए आचार्य अभय आर्य जी ने वर्तमान समय में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के द्वारा क्षेत्र में किये जा रहे समाज सुधार व धर्म रक्षा के कार्यो का वर्णन करते हुए विभिन्न स्थानों से पहुँचे जनसमूह का स्वागत व धन्यवाद किया।

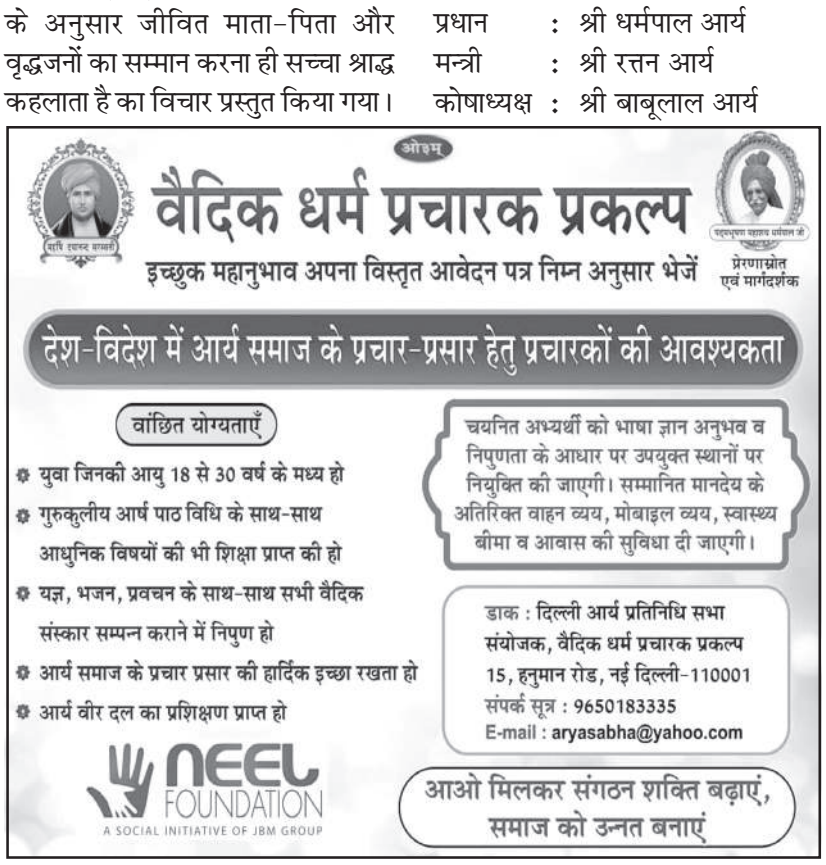

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 नवम्बर, 2021 से रविवार 28 नवम्बर, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 25-26/11/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 नवम्बर, 2021

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्वामी श्रद्धानन्द जी का 104वां जन्मोत्सव, कार्यकर्ता सम्मेलन .....

हैं। ऐसे महान व्यक्तित्व के कारण ही आर्य समाज जीवित है। त्याग एवं सेवा भाव से ओतप्रोत पूज्य स्वामी जी ने महाराष्ट्र में आर्य समाज की नई पीढ़ी बनाई है। जाति-पाति की दीवारों को तोड़कर आपने एक मानव जाति की परंपरा शुरू की है। स्वामी जी का यह कार्य निश्चित ही आने वाले भविष्य को उज्जवल बनाने वाला है।

आर्य कार्यकर्ता उद्बोधन सम्मेलन

21 नवम्बर को ही आर्यसमाज गांधी चौक लातूर में एक दिवसीय 'राज्यस्तरीय आर्य कार्यकर्ता उद्बोधन सम्मेलन' का आयोजन हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता महाराष्ट्र सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी ने की। सम्मेलन में प्रमुख मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय जी आर्य ने भारी संख्या में उपस्थित आर्यों जनों को बहुत ही प्रेरक उद्बोधन दिया। उन्होंने ओजस्वी वचनों द्वारा आर्य जनों में नई ऊर्जा जगाते हुए आर्य समाज के उज्ज्वल अतीत को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में खड़ी भयावह गंभीर स्थिति का सामना करने के लिए सजग रहने का आवाहन किया।

महाराष्ट्र सभा के महामंत्री श्री राजेंद्र जी दिवे ने कार्यक्रम की प्रस्तावना की। इस अवसर पर सभा के उप प्रधान श्री आनंदमुनिजी, प्रमोद कुमार जी तिवारी, उपमंत्री लखमसी भा वेलानी, शंकरराव जी बिराजदार, प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, आर्य वीर दल अधिष्ठाता व्यंकटेशजी हालिंगे, तथा अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. नयनकुमार आचार्य ने किया! तथा श्री सोमवंशी जी ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस राज्य स्तरीय सम्मेलन में महाराष्ट्र के विविध जिलों से लगभग डेढ़ सौ की संख्या में आर्य जन उपस्थित थे।

अन्तरंग सभा - चिन्तन बैठक

प्रांतीय सभा के अंतरंग सदस्यों की सभा बैठक' में भी श्री विनय जी आर्य ने संबोधित किया। आर्य समाज को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाओं का शुभारंभ करने का आह्वान सदस्यों को किया। आर्य समाज के सत्संग, समारोह आदि को नया रूप देने का भी अनुरोध किया।

इस यात्रा में श्री विनय जी आर्य ने पूर्व राज्यसभा सदस्य एवं प्रसिद्ध शिक्षाविद् तथा स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय नांदेड़ के पूर्व उपकुलपति डॉ.श्री जनार्दन रावजी वाघमारे' के घर पहुंच कर उनसे भेंट की। आर्य जगत की ओर से उनका सम्मान किया एवं उनके साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा की।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का 104वें जन्मोत्सव, कार्यकर्ता सम्मेलन एवं चिन्तन बैठक में उपस्थित आर्यजनों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं से भरा आर्यसमाज का हॉल

प्रतिष्ठा में,

श्री विनय जी आर्य ने आर्य परिवार से जुड़े उस्मानाबाद के उप जिलाधीश एवं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि जी (डॉ. श्री प्रतापजी सुग्रीव काले साहब) से भी भेंट करके चर्चा की और उनको भी दिल्ली सभा की ओर से पीतवस्त्र एवं सम्मान पत्र भेंट करके सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ. मुनि जी की सुपुत्री कु. अनुष्का को आई आई टी परीक्षा में ऊंचे दर्जे की सफलता प्राप्त करने पर श्री विनय जी ने आर्य ने सम्मानित कर शुभकामना प्रदान की।

- नयन कुमार आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह